केला

सिंचाई

केले को प्रचुर सिंचाई की आवश्यकता होती है। सिंचाई की जरूरतें बहुत अधिक स्थलाकृति, मिट्टी, जलवायु और विविधता पर निर्भर करती है। गर्म मौसम के दौरान, 3-4 दिनों के अंतराल पर जलगांव (महाराष्ट्र) के पास सिंचाई की जाती है। बरसात के बाद, सिंचाई की संख्या और पानी की मात्रा दोनों की कम हो जाती है। सिंचाई की बेसिन विधि आमतौर पर बहुत ज्यादा अपनाई जाती है। इस प्रणाली में उनके द्वारा ही पौधों को पानी की सप्प्लाई की जाती है, बीच वाले स्थानों को नहीं जिनमें जडे होती है। सिंचाई के दौरान, एक सामान्य सावधानी के रूप में, एक बेसिन को दूसरे के साथ जोडने से बचा जाए।

टिशु कल्चर पौधों की ड्रिप सिंचाई हेतु अच्छी प्रतिक्रिया रहती है। परिणामस्वरूप जल्दी और बेहतर उपज में ड्रिप सिंचाई वाले पौधों की अधिक पैदावार होती है। बाढ सिंचाई की स्थिति में, सप्ताह में एक बार सिंचाई की सिफारिश की जाती है।